Page I

B.A. III

Group A, Paper I

Industrial Psychology

Topic— Contribution of Frank B. Gilbreth in the Scientific management.

वैज्ञानिक प्रबंधन के क्षेत्र में दूसरा महत्वपूर्ण योगदान फ्रैंक बी. गिलब्रेथ (Frank B. Gilbreth) का था जो यांत्रिक अभियंता थी थे जो टेलर का शिष्य था। इन्होंने वैज्ञानिक प्रबंधन के गति अध्ययन (Motion study) पर समय अध्ययन (Time study) की तुलना में अधिक बल डाला। गिलब्रेथ ने औद्योगिक दक्षता (Industrial efficiency) को उन्नत बनाने के लिए कुछ खास नियमों को प्रतिपादित किया। जो निम्नलिखित है

(1) वैयक्तिकरण का नियम (Principle of Individualization) — इस नियम के अनुसार प्रत्येक कार्यकर्ता के कार्यों का अलग-अलग मापन किया जाना चाहिए ~~पर बल दिया~~ तथा उसकी पहचान भी अलग-अलग होनी चाहिए पर बल दिया। उनका यह भी मत था कि कार्य परिस्थिति ऐसी होनी चाहिए जिसमें वैयक्तिक कार्यकर्ता अपने आप को ठीक ढंग से समायोजित कर सके न कि उन पर इन कार्य के लिए अनावश्यक बल डालना पड़े।

(2) सपादन का नियम — (Principles of functionalization) — यह नियम है

अनुसार कार्य परिस्थिति ऐसी होनी चाहिए कि कार्यकर्ता यह आसानी से समझ सके कि उन्हें कौन-कौन सा कार्य या गति करनी है तथा कौन-कौन सी गति ऐसी है जिन्हें वह अनावश्यक समझकर (उनका परित्याग कर सकता हो जिससे कार्यकर्ता को काफी सुविधा होगी।

(3) मापन का नियम (Principle of measurement) इस नियम के अनुसार कार्य-परिस्थिति तथा कार्य का स्वरूप ऐसी होनी चाहिए कि कार्यकर्ता द्वारा किए गए कार्य का उचित ढंग से मापन हो सके।

(4) विश्लेषण तथा संश्लेषण का नियम (Principle of analysis and Synthesis) — यह नियम किसी कार्य में होनेवाली सभी तरह के गतियों के विश्लेषण तथा उन्हें उपयुक्त ढंग से संश्लेषित करने पर बल डालता है ताकि कार्यकर्ता यह आसानी से जान सके कि उन्हें कौन-कौन आवश्यक गतियों का करना है तथा कौन-कौन गतियाँ अनावश्यक हैं जिनका उन्हें परित्याग करना हो।

(5) मानकीकरण का नियम (Principle of Standardization) इसमें प्रत्येक कार्य की गति को एक मानक ढंग से किया जाना चाहिए।

(6) अभिलेखन एवं कार्यक्रम का नियम — Principles of records and programmes) — इसमें कार्य परिस्थिति में कार्यकर्ता द्वारा की जानेवाली सभी आवश्यक तथा अनावश्यक गतियों को उचित ढंग से अभिलेखन करना आवश्यक होता है

ताकि उसके आधार पर एक ठोस कार्यक्रम तैयार किया जा सके। महत्त्वपूर्ण गतियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया जा सके।

(7) शिक्षण का नियम (Principles of teaching) – इस नियम के अनुसार कार्यकर्ता को कार्य-परिस्थिति में वैज्ञानिक गति देने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। जिससे कार्यकर्ता सिर्फ आवश्यक गति के महत्त्व को समझ सके तथा उसका लाभ उठा सके।

(8) प्रोत्साहन का नियम (Principles of incentive) – कार्य-परिस्थिति में कार्यकर्ता को आवश्यक गति करने हेतु उचित प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए ताकि उनका झुकाव आवश्यक गति की ओर बना रहे।

(9) कल्याण का नियम (Principles of welfare) – इस नियम के अनुसार कार्य-परिस्थिति का स्वरूप ऐसा हो कि कार्यकर्ता द्वारा किये गए कार्यों एवं गतियों से अधिक से अधिक संतुष्टि हो तथा उसे इसका लाभ मिल सके।

अतः गिलब्रेथ के वैज्ञानिक प्रबंधन के नियम टेलर के वैज्ञानिक प्रबंधन से अधिक विस्तृत एवं व्यापक हैं तथा साथ ही साथ अधिक वैध भी थे। गिलब्रेथ के उपर्युक्त नियमों से यह पता चलता है कि कार्य-परिस्थिति के विस्तृत ब्योरा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए कि कार्यकर्ता के साथ ठीक ढंग से समायोजन हो जाए, न कि कार्यकर्ता पर ही दबाव डालकर उसे कार्य-परिस्थिति से समायोजन करने के लायक बनाया जाए।

Kumar Patil
Maharaja College, Ara